स्नातक (प्रतिष्ठा) भाग-1हेतु
दर्शनशास्त्र विषय की पाठ्यसामग्री

डॉ. सच्चिदानंद प्रसाद
डॉ. राज नारायण सिंह

दर्शनशास्त्र विभाग
आर आर एस कॉलेज , मोकामा
(पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय)

भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएं

- भारत के विभिन्न दर्शनों में जो साम्य दिखाई देतें हैं उन्हें ही भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएं कहा जाता है,जो निम्न हैं

संसार को दु:खमय मानना

भारतीय दर्शन की एक प्रमुख विशेषता यह है कि यहां के दार्शनिकों ने संसार को दु:खमय माना है।दर्शन का विकास ही भारत में आध्यात्मिक असन्तोष के कारण हुआ है।विश्व में तीन प्रकार के दु:ख माने गए हैं-

- आध्यात्मिक (शारीरिक और मानसिक दु:ख)
- आधि-भौतिक (पशु और मनुष्य से उत्पन्न दु:ख)
- आधि-दैविक (बाढ़, अकाल,भूत-प्रेत इत्यादि)

आत्मा की सत्ता में विश्वास

- भारतीय दर्शन की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि चार्वाक को छोड़कर प्रायः सभी दार्शनिक आत्मा की सत्ता में विश्वास करते हैं।
  चार्वाक चैतन्यविशिष्ट देह को ही आत्मा कहता है।
  न्याय वैशेषिक आत्मा को स्वभावतः अचेतन मानकर चेतना को आत्मा का आगंतुक गुण माना है।
  सांख्य और अद्वैत वेदान्त ने चेतना को आत्मा का स्वरुप माना है।

कर्म सिद्धान्त में आस्था

- समस्त भारतीय दर्शन चाहे वह वेद विरोधी हो या वेदानुकूल हो, कर्म सिद्धान्त को मान्यता प्रदान करते हैं। इस नियम के अनुकूल शुभ कर्मों का फल शुभ तथा अशुभ कर्मों का फल अशुभ होता है।

- कृत प्रणाश – किये हुए कर्मों का फल नष्ट नहीं होता है।
- अकृत्म्युपगम – बिना किये हुए कर्म का फल प्राप्त नहीं होता है।

कर्म तीन प्रकार के हैं-

1. संचित कर्म (जो अतीत के कर्मों से उत्पन्न होता है, पर जिसका फल मिलना शुरू नहीं हुआ है।)
2. प्रारब्ध कर्म (जिसका फल मिलना शुरू हो गया है)
3. संचीयमान कर्म (वर्तमान जीवन का कर्म जिसका फल भविष्य में मिलेगा)

पुनर्जन्म में विश्वास

- चार्वाक को छोड़ सभी दार्शनिक , वैदिक तथा अवैदिक पुनर्जन्म अथवा जन्मांतरवाद में विश्वास करतें हैं।

पुनर्जन्म का सिद्धांत आत्मा की अमरता से फलित होता है।

दर्शन के व्यावहारिक पक्ष पर बल

- भारत में दर्शन का जीवन से गहरा संबंध है। दर्शन का उदेश्य सिर्फ मानसिक कौतूहल की निवृत्ति नही है, बल्कि जीवन की समस्याओं को सुलझाना है। इस प्रकार भारत मे दर्शन को जीवन का अभिन्न अंग कहा गया है। प्रो. हिरियांना के अनुसार "दर्शन सिर्फ सोचने की पद्धति न होकर जीवन पद्धति है।" राधाकृष्णन के अनुसार " भारत में दर्शन जीवन के लिए है।" इस प्रकार दर्शन साधन है जबकि साध्य है दुखों से निवृत्ति।

मोक्ष को जीवन का चरम लक्ष्य मानना

- चार्वाक को छोड़कर समस्त भारतीय दर्शनों में मोक्ष को जीवन का चरम प्राप्तव्य माना गया है।
- जैन दर्शन में मोक्ष को जोवन का चरम लक्ष्य कहा गया है। मोक्षावस्था में आत्मा अनंत ज्ञान, अनंत शक्ति, अनंत दर्शन एवं अनंत आनंद को प्राप्त कर लेती है।
- न्यायवैशेषिक दर्शन में मोक्ष को दुःख के उच्छेद की अवस्था कहा गया है।
- सांख्य के अनुसार मोक्ष का अर्थ तीन प्रकार के दुखों से छुटकारा पाना है।
- मीमांसा दर्शन में मोक्ष को सुख-दुःख से परे की अवस्था कहा गया है।
- अद्वैत – वेदान्त दर्शन में मोक्ष का अर्थ आत्मा का ब्रह्म में विलीन हो जाना है। मोक्ष को शंकर ने आनंद की अवस्था कहा है।
- विशिष्टाद्वैत वेदांत के अनुसार मुक्ति का अर्थ ब्रह्म से मिलकर तदाकार हो जाना नही है, बल्कि ब्रह्म से सादृश्य प्राप्त करना है। मोक्ष दुखाभाव की अवस्था है। मोक्ष भक्ति के द्वारा सम्भव होता है।

- भारतीय दर्शन में दो प्रकार की मुक्ति की चर्चा हुई है।
  - जीवन-मुक्ति (जीवन काल में मोक्ष को अपनाना।)

    बौद्ध, जैन,सांख्य, योग और वेदांत (शंकर) इसके समर्थक हैं।
  - विदेह-मुक्ति (मृत्यु के उपरान्त शरीर के नाश होने पर प्राप्त मोक्ष।)

    न्यायवैशेषिक, मीमांशा और विशिष्टताद्वैत (रामानुज) इसके समर्थक हैं।

बन्धन का मूल कारण अज्ञान है

- चार्वाक के अतिरिक्त भारत के सभी दार्शनिक अज्ञान को बन्धन का मूल कारण मानते हैं। अज्ञान को लेकर सभी दार्शनिकों ने अज्ञान की व्याख्या भिन्न-भिन्न ढंग से की है:-
  - सांख्य दर्शन के अनुसार अज्ञान का अर्थ पुरूष और प्रकृति के भेद ज्ञान का आभाव है।
  - शंकर के दर्शन में अज्ञान का अर्थ है- आत्मा के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान न रहना।
  - बौद्ध दर्शन में सम्यक दृष्टि अपनाने का आदेश दिया गया है।
  - न्यायवैशेषिक दर्शन में तत्त्व-ज्ञान के द्वारा मोक्ष को प्राप्य माना गया है।

****